ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.2, JULY-DEC,2023 /80

चट्टाने"वर महादेव, कोटा, राजस्थान के भौलचित्र

प्रो0 डी0पी0 तिवारी,
कुलपति,
जय मीने"ा आदिवासी वि"वविद्यालय, कोटा राजस्थान।
डॉ0 अनुश्का ओझा, लखनऊ।
https://doi.org/10.61410/had.v18i2.148

चट्टाने"वर महादेव नाम से सुप्रसिद्ध स्थल कोटा जनपद, (राजस्थान) मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर चम्पावती नदी की सहायक नदी चन्द्रलोटी के किनारे 25^0 01′ 50′′ उत्तरी अक्षां"ा एवं 75^0 55′ 03′′ पूरबी दे"ान्तर पर स्थित है। इस स्थल पर पहुंचने के लिए कोटा से झालावाड़ जाने वाली पक्की सड़क पर 21 किलोमीटर चलने के उपरान्त सर्विस रोड से नीचे उतर कर बाईं तरफ जाने वाली पतली पक्की सड़क से लगभग 2 किलोमीटर किसी वाहन से चल कर रेलवे लाइन के किनारे तक पंहुचा जा सकता है। इस स्थान से आगे की लगभग 1 किलोमीटर की दूरी किसी द्विचक्रिका से या पैदल चल कर चट्टाने"वर मंदिर तक पंहुचा जा सकता है। यह मंदिर एक गुफा के अन्दर बनाया गया है। मंदिर के पुजारी के अनुसार इस गुफा की दीवार पर भगवान शंकर का एक चित्र बना था जिस पर अब नए ढंग से उनका चित्र बना दिया गया है। इस स्थान पर दो छोटे–छोटे मंदिर बने हैं जिनमें एक में भगवान ि"ाव शंकर का चित्र है जबकि दूसरे में बजरंगबली की सिंदूर से पुती पाषाण प्रतिमा है। इस मंदिर के उत्तर में पहाण में प्राकृतिक रूप से बनी कतिपय गुफाएं हैं जिनमें कोई शैलचित्र नहीं है (चित्र–1)।

चित्र–1, चट्टाने"वर की प्राकृतिक गुफाएं

एक गुफा में स्थानीय पुजारी हवन कर आराधना एवं साधना करते हैं। मंदिर से नीचे उतरते ही चम्पावती नदी की सहायक चन्द्रलोटी नदी मिलती है जिसे पार कर इस नदी की दो धाराओं के बीच

में स्थित पहाड़ी के एक शैलाश्रय में जिसकी लम्बाई 36 मीटर, गहराई लगभग 4 मीटर एवं ऊॅचाई लगभग 3 मीटर है, शैल चित्र बने मिलते हैं।

इस शैलाश्रय का मुख पूरब–दक्षिण की ओर है। इस शैलाश्रय में मनोरंजन करने वाले समय–समय पर आते हैं। यहां रुक कर बाटी–चोखा बनाकर खाते हैं जिससे शैलाश्रय की छत की दीवारें धुंए से प्रभावित होकर काली हो गई हैं। यहां बने शैलचित्रों के ऊपर उन्होंने पेंट से अपना नाम और अपने साथी के लिए प्रणय संबोधन लिख डाले हैं जिससे मूल शैलचित्र ढक गए हैं (चित्र–2)। जिन शैल चित्रों को येन–केन प्रकारेण पहचाना जा सकता है उनका विवरण निम्नवत है।

चित्र–2, चट्टाने"वर प्रथम शैलाश्रय

इस शैलाश्रय के दांए पा"र्व में छत पर एक डीलदार बैल का सुन्दर चित्र बना है जिसकी दोनों सीगें तथा डील सुन्दर ढंग से बनाई गई हैं। इसके शरीर पर आड़ी–बेड़ी रेखाओं से सजाया गया है। इसके बनाने में लाल रंग का प्रयोग किया गया है। यह चित्र नवपाषाण काल का प्रतीत होता है (चित्र–3)

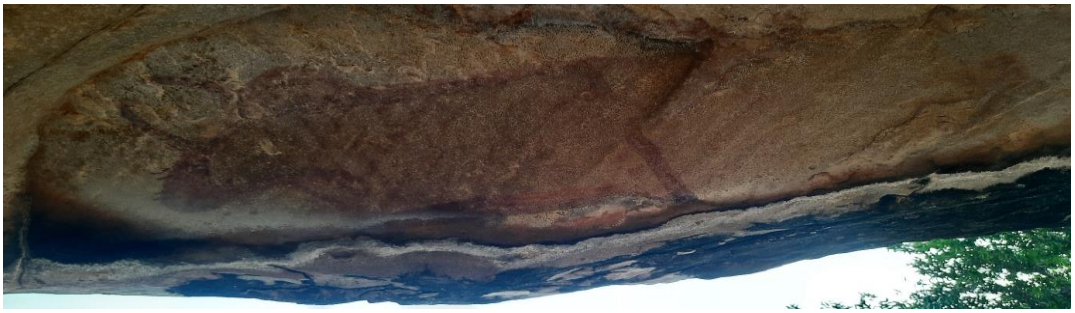

चित्र–3, डीलदार बैल, चट्टाने"वर प्रथम शैलाश्रय

इसके आगे कुछ मानवाकृतियां रेखीय रूप में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ स्पष्ट हैं तथा कुछ धुंधली पड़ गई हैं। बहुत संभव है कि यहां एक सामूहिक नृत्य का प्रसंग चित्रित किया गया रहा हो जो अब फीका पड़ गया है तथा आं"ाक रूप से ही दृष्टिगोचर हो रहा है (चित्र–4)। इसी के नीचे बर्फी के आकार की एक डिजाइन बनी मिलती है (चित्र–5) जो किसी प"ाु के शरीर पर बना हुआ लगता है जब कि उसके निचले भाग में एक अन्य रेखीय डिजाइन भी बनी है (चित्र–6) जो किसी चिड़िया का पृष्ठ भाग सा दिखाई देता है। इन्हीं चित्रों के पास एक पंक्ति में बने तीन जानवरों का चित्र बना है जिसमें से बड़ा एक हिरन है, शेष दो छोटे–छोटे बच्चे पहचान योग्य नहीं हैं (चित्र–7)।

चित्र–4, मानवाकृतियां, समूह नृत्य चित्र

चित्र–5, रेखीय डिजाइन (प"ाु?)

चित्र–6, रेखीय डिजाइन, चिड़िया

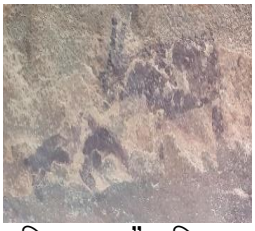

चित्र–7, प"ाु–हिरन

अन्य प"ाुओं में बकरी जिसका मुंह, सींगें, आगे के पैर अ़च्छी तरह पहचाने जा सकते हैं (चित्र–8), हिरन जिसकी एक सींग, छोटा सा मुंह, गर्दन के ऊपर के उड़ते बाल, पैर और पूंछ सुस्पष्ट हैं। इसके शरीर को ज्यामितिक डिजाइन से अलंकृत किया गया है (चित्र–9)। इस शैलाश्रय की छत पर घोड़ा, सूअर (चित्र–10), बाघ (चित्र–11) कुत्ता (चित्र–12), स्वस्तिक (चित्र–13), चक्र (चित्र–14) प"ाु का ि"ाकार (चित्र 15), प्रणय (चित्र–16)

चित्र–8, बकरी

चित्र–9, हिरन

चित्र–10, घोड़ा, सूअर

चित्र–11, बाघ

चित्र–12, कुत्ता

चित्र–13, स्वस्तिक

चित्र–14, चक्र

चित्र–15, ि"ाकार

चित्र–16, प्रणय चित्र

फूल एवं पत्तियों का अंकन (चित्र–17) किया गया है।

चित्र–17, फूल–पत्तियोंका चित्रण

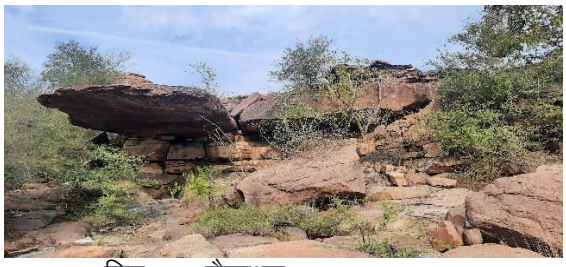

चित्र–18, शैलाश्रय–2

चट्टाने"वर प्रथम शैलाश्रय से नदी की प्रवाह की दि"ाा में लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर एक अन्य शैलाश्रय में भी शैलचित्र बने हुए मिलते हैं जो अब बहुत हल्के हो गए हैं (चित्र–18)। इनमें प"ाुओं के चित्र प्रमुखता से पाए जाते हैं। इन प"ाुओं में हिरन (चित्र–19), कूबड़वाला बैल (चित्र–20) तथा मनुष्य और प"ाु के चित्र मुख्य हैं (चित्र–21)।

चित्र–19, हिरन

चित्र–20, बैल

चित्र–21, मनुष्य एवं प"ाु

चित्र–22, शैलाश्रय–3

नदी के प्रवाह की दि"ाा में लगभग आधा किलोमीटर और आगे चलने पर एक तीसरा शैलाश्रय मिलता है (चित्र–22)। यह आधार शैल से 1 से कम मीटर ही ऊॅची है, जिसमें लेटकर ही चित्रों को देखा जा सकता है। इसमें तीन प"ाुओं के चित्र बने हैं जिसमें एक हिरन का मुंख एवं लम्बी सींगें बहुत ही स्पष्ट हैं (चित्र–23)। इस शैलाश्रय के सम्मुख भाग पर और सामने की फ"ार्ा पर कतिपय पेट्रोग्लिप्स भी बने मिलते हैं जिनमें वलयाकृतियॉ (चित्र–24) और कप मार्क्स मुख्य हैं (चित्र–25–26)। इस क्षेत्र में कप मार्क्स का एक बहुत वि"ाल समूह इन्द्रगढ़ पहाड़ी पर दरकी चट्टान में मिलता है[1] जिसकी खोज रमे"ा कुमार पंचोली ने की थी[2]। यहां 500 कप मार्क्स बने हैं[3]। इनका अध्ययन प्रोफेसर गिरिराज कुमार ने किया और इनकी तिथि निम्न पुरा पाषाण काल निर्धारित की[4]।

चित्र–23, शैलाश्रय–3, प"ाु समूह

चित्र–24, वलय

चित्र–25–26, कप मार्क्स

चट्टाने"वर शैलाश्रय क्रमांक 2 में भी कतिपय कप मार्क्स एवं पेट्रोग्लिप्स हैं जिनमें विन्दु समूहों द्वारा वृत्त और क्रास डिजाइन बनाई गई है (चित्र–27)। इसकी दीवार पर दो हिरन और परस्पर एक दूसरे के कन्धे पर हाथ रख कर नृत्य करने वालों का एक समूह चित्र बनाया गया है (चित्र–28)।

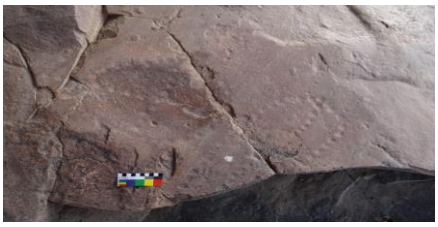
चित्र–27, कप मार्क्स एवं इनग्रेव्ड डिजाइन्स

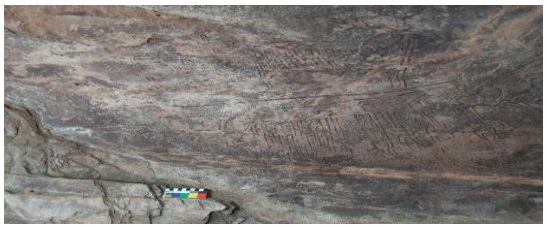
चित्र–28, हिरन एवं समूह नृत्य

चट्टाने"वर महादेव के इन शैलाश्रयों को प्रका"ा में लाने का श्रेय प्रोफेसर गिरिराज कुमार को है[5]। उनसे वार्ता के क्रम में यह भी ज्ञात हुआ कि इस क्षेत्र से उन्हें पहले अ"यूलियन प्रकार के पाषाण उपकरण भी प्राप्त हो चुके हैं किन्तु प्र"नगत प्रयत्न में कुछ टूटे लघुपाषणोपकरणों, वि"ोष कर खण्डित ब्लेड उपकरणों के अतिरिक्त कुछ और न मिला। समीक्षात्मक दृष्टि से विचार करने पर चट्टाने"वर की भौगोलिक स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। यह स्थल नदी के किनारे स्थित है जहां पीने का पानी सुलभ था।

शैलाश्रयों से संलग्न पठार वनाच्छादित था जिसमें रहने वाले प"ाुओं के ि"ाकार और वन्य उत्पादों से उदरपूर्ति सुगमता से की जा सकती थी। अतः यहां मध्य पाषाण काल से अधिवास होने की प्रवल संभावना दिखाई देती है। जहां तक इन चित्रों की प्राचीनता का प्र"न है इनमें कुछ मध्य पाषाण काल[6], कुछ नवपाषाण काल के हैं, शेष अन्य ताम्रपाषाण काल और ऐतिहासिक काल के। बनाए गए प"ाुओं की आकृतियों में गाय–बैल सूअर, बकरी, हिरन, बाघ, कुत्ता, प्रमुखता से चित्रित हैं जिनमें हिरन की संख्या अधिक है। ये अधिकतर पालतू वर्ग के हैं। डीलदार बैलों से लगाव इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि समीपवर्ती पठार के किसी अंचल में ये चित्रकार खेती भी करते थे।

संदर्भः

1. डॉ0 प्रद्युम्न कुमार भट्ट, संस्कृति एवं पर्यटन द"ापुर–भानपुरा अंचल, भानपुरा, 2016, पृ0 16, 29
2. रमे"ा कुमार पंचोली, भानपुरा क्षेत्र में नवीन शोध, पुराकला जिल्द 5, अंक 1–2, पृ0 75
3. Giriraj Kumar, Darki-Chattan: A Palaeolithic Culture Site in India, Rock Art Research, Volume 13, No. 1, Page 38.
4. Giriraj Kumar, Darki-Chattan: A Palaeolithic Culture Site in India, Rock Art Research, Volume 13, No. 1, Page 45.
5. Hridayshri, Stone Age Rock Art and Communication Design: A Preliminary Study-Part 2, Purakala 2021, Vol. 30-31, P 25.
6. G.Kumar, R.K.Pancholi, S. Nagdev, G.S. Runwal, J.N.Srivastava and J.D.Tripathi, Rock Art of Upper Chambal Valley Part-1, Purakala, Volume 3, No 1-2, Page 15, 31; Giriraj Kumar, Rock Art of Upper Chambal Valley Part II: Some observations, Purakala, Volume 3, No 1-2,1992, Page 60, 63.